श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल,
राजस्थान का उद्‌बोधन

उच्च अध्ययन शिक्षा (मानित विश्वविद्यालय)
का पंचम दीक्षान्त समारोह

दिनांक 11 सितम्बर,, 2020 **समय : दोपहर 12. 00 बजे**

गांधी विद्या मन्दिर, सरदार शहर

स्थान : राजभवन, जयपुर

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) गांधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर के कुलपति, रजिस्ट्रार, अभिभावकगण, छात्रों, छात्राओं, भाइयो और बहनो।

इस दीक्षांत समारोह के लिए आप सभी को बधाई देता हूँ। शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं मानवीय मूल्यों के मुख्य उद्देश्यों के साथ 2 अक्टूबर 1950 में स्थापित यह इस संस्था का 1955 में भारत के प्रथम राष्ट्रपति महामहिम श्री राजेन्द्र प्रसाद जी ने ग्रामीण विश्वविद्यालय के रूप में शिलान्यास किया था। संस्था में श्री विनोबा भावे, श्री हरिभाउ उपाध्याय, श्री निरंजन नाथ आचार्य, डॉ. श्रीमन्न नारायण अग्रवाल, डॉ. करणी सिंह, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, जस्टिस बी.पी. बैरी, डॉ. एल.एम. सिंघवी तथा वर्तमान में प्रो. पुरूषोतम लाल चतुर्वेदी जैसे मनीषियों का सहयोग एवं मार्गदर्शन कुलाधिपति के रूप में सतत् प्राप्त होता रहा है। यह ऐतिहासिक शैक्षणि संस्था है।

संस्थान में प्रारंभ से ही ग्रामीण अंचल के विद्यार्थी अध्ययन करते रहे है और संस्था प्रारंभ से ही ऐसी शिक्षा दे रही है कि यहां से निकले विद्यार्थी ग्रामीण अंचल में शिक्षक के रूप में एवं अन्य संबंधित क्षेत्रों में अपने दायित्वों का भली प्रकार निर्वहन कर रहे है। सरदारशहर तहसील के अधिकतर ग्रामीण विद्यालयों में एवं राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में यहां से पढ़े विद्यार्थी शिक्षक के रूप में कार्यरत है।

मैं सभी स्वर्ण पदक विजेताओं को उनके अथक प्रयासों व उपलब्धि के लिए बधाई देता हूँ। मैं उन सभी छात्र व छात्राओं को भी बधाई देता हूँ, जिनको आज यहां उपाधि से सुशोभित किया गया है व मैं आशा करता हूँ की आप सभी देश के विकास में योगदान देते हुए अपने जीवन में उन्नति की और अग्रसर होंगे।

कुलपति के प्रतिवेदन द्वारा ज्ञात हुआ कि विश्वविद्यालय में गत वर्ष में शिक्षा, अनुसन्धान व प्रसार के क्षेत्र में अच्छा कार्य हुआ है।

इसके लिए मैं, कुलपति व सभी कार्मिकों को बधाई देता हूँ और आशा है, आप सभी पूरी निष्ठा के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए इस विश्वविद्यालय को उच्च मुकाम तक पहुंचाने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे।

कृषि की महत्ता हम सभी को ज्ञात है, जीवन की तीन सबसे बड़ी ज़रूरतें रोटी, कपड़ा और मकान में रोटी और प्राकृतिक रेशे वाला कपड़ा, कृषि से ही आता है। हमारे देश में कृषि का योगदान सकल घरेलू उत्पाद में करीब 18 प्रतिशत रह जाने का कारण यह नहीं है कि कृषि में विकास नहीं हो रहा बल्कि देश में विकास के साथ अन्य क्षेत्रों का विकास अधिक तेज़ी से हुआ है, जो एक विकासशील देश में होना अवश्यम्भावी है।

कृषि का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि आज भी हमारे देश की 58 प्रतिशत जनता कृषि पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर है, जो देश के विकास का महत्वपूर्ण अंग है।

कृषि से जुड़े सभी नीति निर्धारकों, वैज्ञानिकों, अध्यापकों, उद्यमियों और विद्यार्थियों पर बड़ी ज़िम्मेदारी है कि कृषि को नए आयामों पर ले जाने में कोई कसर नहीं छोड़ें और कृषक वर्ग को आय सुरक्षा प्रदान करने में अपना योगदान दें।

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय पर तो मरू क्षेत्र में कृषि विकास की भी ज़िम्मेदारी है क्योंकि इस क्षेत्र में अनुसन्धान, नए उद्यमों व नवाचार की अभी बहुत गुंजाइश हैं, इस क्षेत्र में काफी कुछ किया गया है और काफी कुछ किया जाना बाकी है। वैश्वीकरण के प्रभावों से कृषि क्षेत्र अछूता नहीं है। वैश्वीकरण का लाभ उठाने के लिए कृषि उत्पादों में गुणवत्ता एवं मूल्य संवर्धन पर अधिक काम करने की आवश्यकता है।

भारत ऐसा देश हैं, जहाँ नौजवानों की संख्या अधिक है। इन युवाओं की ऊर्जा व समझदारी से हम देश को नई ऊंचाइयों पर ले जा सकते हैं।

प्रिय विद्यार्थियों,

आप सभी बहुत भाग्यशाली हैं कि आज अनेक सरकारी योजनाएं आपके उद्यम को शुरू करवाने में सहायक हैं। आज आपके पास, आपके सपने पूरे करने व मुकाम हासिल करने के अनेक अवसर हैं। बस ज़रुरत है कि आप अच्छी कार्य योजना बनाकर, इन अवसरों का लाभ उठाते हुए, अपनी मेहनत के बल पर आगे बढ़ें और देश की प्रगति में भी भागीदारी बनें।

मुझे आशा है कि सभी युवा, देश में कृषि क्षेत्र व किसानों की स्थिति सुधारने में महत्ती भूमिका निभाते हुए कृषि को एक लाभकारी उद्यम बनाने में सहयोग करेंगे ताकि भविष्य में कृषि व ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों का रुझान बढ़ सके।

कोविड–19 की महामारी ने जीवन के परिदृश्य को बदल कर रख दिया है। आज संपूर्ण विश्व इस परेशानी से जूझ रहा है व सभी पूर्ण सतर्कता के साथ इस महामारी को हराने में लगे हैं। अचानक आई इस विपदा ने मानव जाति को संकट में डाल दिया है, किंतु हम सभी ने इस परेशानी का पूरे साहस से सामना किया है व हार नहीं मानी है।

आज उद्यमों के नए रूप सामने आये हैं। डिजिटल तरीकों से पढ़ाई हो रही है। छोटी व बड़ी सभी उम्र के लोगों ने इसका प्रयोग सीख कर काम करना शुरू कर दिया है। बड़े–बड़े आयोजन डिजिटल तरीकों से हो रहे हैं। कोविड महामारी के समय में भी कृषि क्षेत्र में शुरू में कुछ क्षेत्रों को नुकसान हुआ पर सरकार, उद्यमियों व कृषकों के मिले–जुले प्रयासों की वजह से अच्छे परिणाम सामने आ रहे हैं।

इस महामारी के समय जिस तरह से ग्रामीणों को, शहरों से अपने गांवों की तरफ दौड़ना पड़ा, वह अत्यंत पीड़ादायक रहा।

वर्तमान समय में विशेष तौर पर शैक्षिक क्षेत्र में मूल्यों का ह्रास सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है। ऐसे में प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक सतत रूप में मूल्यों के संवर्धन की महती आवश्यकता है।

मुझे बताया गया है कि यह संस्था अपने प्रारंभ से ही मूल्यों के संवर्धन का पर्याय रही है। प्रत्येक मंगलवार को एक घंटे की 'सर्वधर्म प्रार्थना सभा' जिसमें सहायक कर्मचारी से लेकर कुलाधिपति, अध्यक्ष, समस्त अधिकारी, कार्यकर्ता, विद्यार्थी, शिक्षक सभी एक साथ सम्मिलित होते हैं। इसी प्रकार विश्वविद्यालय में नियमित श्रमदान, योगाभ्यास, पाठ्य सहगामी क्रियाएं, अपना परिवार एवं समय–समय पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रशिक्षण शिविर आदि गतिविधियों का आयोजन किया जाता है।

विद्यार्थियों में मूल्य संवर्धन हेतु यहां के पाठ्यक्रम में इन गतिविधियों को अभिन्न अंग के रूप में समाविष्ट किया है एवं समाज सेवा में भागीदारी से मूल्यों का संवर्धन किया जा रहा है। विद्यार्थियों में संस्कारों का बीजारोपण करने के लिए संस्थान चेतना विकास मूल्य शिक्षा, श्रमदान–गौशाला प्रबन्धन, खेती तथा फसल उत्पादन एवं सेवा कार्यों का विशेष शिक्षण प्रदान करता है।

विश्वविद्यालय ने पर्यावरण संवर्धन हेतु एक विद्यार्थी एक वृक्ष को विद्यार्थी की उपाधि के साथ जोड़ा है। जब किसी विद्यार्थी का प्रवेश विश्वविद्यालय में होगा तब उसे एक वृक्ष लगाना होगा और उसकी देखभाल का संपूर्ण दायित्व उसी विद्यार्थी का रहेगा। विद्यार्थी को उपाधि तभी प्राप्त होगी जब वह अपने अध्ययन काल में एक पेड़ लगाकर पल्लवित कर लेगें। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों द्वारां स्वच्छ भारत अभियान को केवल नाम के लिए ही नहीं अपितु काम के लिए अपनाया है।

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षक प्रति सप्ताह शहर के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर स्वच्छता कार्य करते है। विश्वविद्यालय ने अपने परिसर में एकल उपयोग प्लास्टिक को पूर्णतः प्रतिबधित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा स्वदेशी तथा स्थानीय उत्पादों की खरीद पर जोर दिया है। यह सराहनीय प्रयास है।

आप ने मुझे इस समारोह से जोड़ा इसके लिए मैं आभार ज्ञापित करता हूँ।

धन्यवाद। जयहिन्द।